International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, January-June 2022, Submitted in June 2022, iajesm2014@gmail.com

छात्रों एवं छात्राओं के राजनैतिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक परिवेश के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

बसंत कुमार, शोधार्थी, शिक्षा विभाग, राधा गोविन्द यूनिवर्सिटी, रामगढ, झारखण्ड

भूमिका

प्रस्तुत शोध छात्रों एवं छात्राओं के आत्मविश्वास राजनैतिक रूचि एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक परिवेश के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करता है। सामाजिक विज्ञानों एवं शिक्षा शास्त्रों में ही नहीं अपितु प्रत्येक शोध कार्य में निष्कर्ष एवं सुझाव एक अत्यन्त महत्वपूर्ण सोपान माना जाता है। वस्तुतः शोध, निष्कर्ष एवं सुझावों के लिए ही किया जाता है और सम्पूर्ण शोध का महत्व इसी सोपान पर निर्भर करता है। यह अध्याय सम्पूर्ण शोध का निष्कर्ष होता है। शोध कार्यों के निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति एवं शोध से सम्बन्धित परिकल्पनाओं की पुष्टि या खण्डन होने के बाद ही सिद्धान्त निरूपण किया जाता है।

जहां तक शुद्ध विज्ञानों का प्रश्न है निष्कर्षो को अन्तिम सोपान माना जाता है। लेकिन व्यवहारिक रूप से जब शोधकर्ता केवल अपने शोध के द्वारा दृष्टिगोचर के कार्य कारण सम्बन्ध की विवेचना करते हुए केवल क्या है ? का उत्तर देता है तो शोध समाज के लिये अपने इस रूप में उपयोगी नहीं होता।

शोधकर्ता से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वह क्यों है ? और क्या होना चाहिए? आदि प्रश्नों के उत्तर भी दे, शोध प्रक्रिया वास्तव में तभी पूर्ण मानी जानी चाहिए। इसलिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निष्कर्षो के साथ – साथ सुझावों को भी महत्व दिया गया है।

परिकल्पनाओं की पुष्टि एवं शोध उद्देश्यों की प्राप्ति

प्रस्तुत शोध अध्ययन की रूपरेखा के अन्तर्गत परिकल्पनाओं को क्रमबद्ध तरीके से प्रस्तुत किया गया है तथा उसी क्रम में उद्देश्यों की भी क्रमांक दिया गया है। कोई भी शोध कार्य परिकल्पनाओं के खण्डन अथवा उनकी पुष्टि द्वारा ही प्रमाणित होता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में शोध परिकल्पनाओं एवं उद्देश्यों की प्राप्ति करना परम वांछनीय है। अतः चतुर्थ अध्याय के सम्पूर्ण व्यवस्थापन, विश्लेषण एवं विवेचन को यहाँ निष्कर्ष रूप में दिया जा रहा है।

परिकल्पना 1.0 – छात्रों एवं छात्राओं के पारिवारिक परिवेश का उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभावों के कोई अन्तर नहीं होता है।

परिकल्पना (1.1) – छात्रों एवं छात्राओं के उच्च व निम्न पारिवारिक परिवेश का उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभावों में कोई अन्तर नहीं होता है।

उद्देश्य 1.0 – छात्रों एवं छात्राओं के पारिवारिक परिवेश का उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

उद्देश्य (i) – छात्रों एवं छात्राओं के उच्च एवं निम्न पारिवारिक परिवेश का उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना क्रमांक 1.0 सारणी क्रमांक 64 के आधार पर खण्डित की गयी है। उक्त सारणी में छात्रों एवं छात्राओं के पारिवारिक परिवेश तथा उनके आत्मविश्वास में सार्थक 't' अनुपात एवं सहसम्बन्ध प्राप्त हुआ है तथा इस निष्कर्ष की पुष्टि साक्षात्कार अनुसूची से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर भी सारणी क्रमांक 25 से 37 के बीच यथा स्थान की जा चुकी है। अतः यह कहा जा सकता है कि छात्रों एवं छात्राओं के पारिवारिक परिवेश का उनके आत्मविश्वास पर महत्वपूर्ण एवं सार्थक प्रभाव होता है। साक्षात्कारदाताओं ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि अच्छे पारिवारिक परिवेश में छात्रों एवं छात्राओं के आत्मविश्वास में कमी आती है।

सुझाव

प्रत्येक शोध का महत्व शोधोपरान्त प्राप्त किये गये निष्कर्षो में निहित होता है। सुझाव बहुउद्देशीय होते है। प्रत्येक सुझाव में सृजनात्मकता एवं सकारात्मकता का भाव निहित होता है। जब शोधार्थी के मस्तिष्क में शोध समस्या जन्म लेती है तभी से शोध का जन्म होता है और शोधोपरान्त निष्कर्षों की सम्प्राप्ति के साथ ही शोधार्थी की मनोकुलता समाप्त होती है।

जिस प्रकार बिना रोग परीक्षण किये अनुमान के आधार पर औषधि सेवन किया जाना लाभप्रद होने के स्थान पर संकट का कारण बनता है, ठीक उसी प्रकार उच्च शिक्षा विभाग में नित नवीन प्रयोग ने शिक्षा को वर्तमान दुर्गति तक पहुँचाया है। शोधकार्य से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर इन परिस्थितियों में भी सुधार सम्भव हो सकता है, यदि गम्भीरपूर्वक सम्बन्धित सुझावों को अमल में लाया जाये। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के निष्कर्षों को दृष्टिगत रखते हुए विभिन्न पक्षों के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते है।

अभिभावकों के लिए सुझाव

प्रारम्भ में माता–पिता के क्रिया–कलाप, संस्कार, मूल्य तथा राजनैतिक रूचियां बालक के लिए पथ प्रदर्शक होती है। वही सीखता है, जो उसे सिखाया जाता है या जिसके साथ उसकी अन्तः क्रियायें विनिर्धानित होती है। संस्कारों का उद्‌भव काल प्रारम्भ की कुछ साल होती है। संस्कारों का बीज परिवार के परिवेश में ही बोया जाता है और उसकी जल वायु में वह अंकुरित, पल्लवित और पुष्पित होता है। अतः परिवार के परिवेश में उपस्थित मानवीय शक्ति बालक के व्यक्तित्व विकास के लिए मुख्य और महत्वपूर्ण अभिकरण बन जाता है। अतः माता–पिता तथा अन्य परिवारजनों को ये प्रयास करने चाहिए कि उनके क्रिया–कलाप, बात–चीत, रूचियां, दृष्टिकोण इस तरह से सुनिश्चित किये जाये, जो बालक के व्यक्तित्व को इस प्रकार विकसित करें कि वह सुयोग्य नागरिक बन सके। इस हेतु निम्नलिखित सुझाव वांछनीय प्रतीत होते है –

1. परिवारिक परिवेश में छात्रों एवं छात्राओं पर आरोपित अत्याधिक बाध्यता एवं अत्यधिक स्वतंत्रता दोनों ही उन के स्वाभाविक विकास के लिए अहितकर होती है। अत्यधिक स्वतंत्रता किशोरों को उद्‌ण्ड तथा अति आत्मविश्वासी बना सकती है जबकि अति बाध्यता उकने आत्म विश्वास को शिथिल कर सकती है। अतः यह बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिए कि उनके पालन–पोषण में इन दोनों स्थितियों से बचना चाहिए और बालक को सीमित बाध्यता और सीमित स्वत्रंतत्रा में रखना चाहिए।
2. अभिभावकों को ये सुझाव दिया जाता है कि छात्रों एवं छात्राओं के प्रति न तो अत्यधिक सजग, तल्लीन और अनुग्रहपूर्ण रहें और न उनके प्रति अनदेखी का प्रदर्शन करे।
3. अभिभावकों को ये चाहिए कि छात्रों एवं छात्राओं के प्रति सदैव निष्पक्ष रहें क्योंकि पक्षपातपूर्ण व्यवहार उन में मानसिक असंतोष एवं हीन भावना को जन्म देता है। यहां ये बात भी ध्यान रखनी चाहिए कि जब कोई बालक अच्छा कार्य करें तो उसकी प्रशंसा सार्वजनिक रूप से अवश्य करे। इससे अन्य बालकों में भी प्रेरणा का संचार होगा।
4. अभिभावकों को छात्रों एवं छात्राओं के प्रति न तो बहुत अधिक सावधानी की आवयकता है और न नितांत लापरवाही की आवश्यकता है। उनको अपने स्तर से खुद कार्य करने की स्वतंत्रता रहनी चाहिए। पग–पग पर उनके कार्यों में सहायता करना किशोरों के आत्म विश्वास पर कुठाराघात कर सकता है। इसी प्रकार उनके प्रति लापरवाही भरा दृष्टिकोण भी उनमें कदाचार तथा आत्म विश्वासहीनता उत्पन्न कर सकता है।
5. पारिवारिक परिवेश में छात्रों एवं छात्राओं के कार्यों को सीमित स्वीकार्यत प्रदान करनी चाहिए। क्योंकि जिन परिवारों में छात्रों एवं छात्राओं के कार्यों को सम स्वीकार्यता प्रदान नहीं की जाती। उन परिवारों के किशोरों में आत्मविश्वास, शैक्षिक उपलब्धि और राजनैतिक रूचि के उचित दिशा में विकास की सम्भावनायें कम हो जाती है।

छात्रों एवं छात्राओं के लिए सुझाव

1. महाविद्यालय में आयोजित होना वाली साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं पाठ्‌य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने से व्यक्तित्व को सर्वांगीण विकास होता है। अतः प्रत्येक छात्र एवं छात्रा को इन क्रियाकलाप में भाग लेना चाहिए।
2. प्रत्येक छात्र एवं छात्रा को शिक्षण सम्बन्धी एवं महाविद्यालय सम्बन्धी समस्याओं से अभिभावकों एवं प्राध्यापकों को समय–समय पर अवगत कराना चाहिए ताकि उनका समय पर समाधान किया जा सके।
3. छात्रों एवं छात्राओं को पारिवारिक परिवेश में सहभागिता करना चाहिए। अपने माता–पिता तथा संरक्षकों में सहयोग करते हुए उन्हें अपनी शैक्षिक उपलब्धि का उन्नत करने के लिए सदैव प्रयासरत रहना चाहिए। इसके लिए उन्हें अपनी आर्थिक स्थिति, सामाजिक प्रस्थिति तथा अन्य शैक्षिक तथ्यों से विचलित हुए बिना अपना कार्य करना चाहिए।
4. परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने पर छात्रों एवं छात्राओं को महाविद्यालय के पुस्तकालय का भरपूर अनुप्रयोग करना चाहिए तथा सरकार द्वारा चलाये गये अनेक शैक्षिक उन्नयन के कार्यक्रमों में सहभागिता करके अपनी शैक्षिक उपलब्धि को अच्छा बनाने का प्रयास करना चाहिए।
5. परिवार की अच्छी आर्थिक स्थिति छात्रों एवं छात्राओं के लिए शैक्षिक उपलब्धि, आत्मविश्वास औ परिष्कृत राजनैतिक रूचि के उद्‌भव के लिए पोषक होती है। किन्तु यह भी असत्य नहीं है कि धन और संसाधनों की प्रचुरता पारिवारिक परिवेश को कुप्रभावित भी कर सकती है। टेलीविजन, वी0सी0पी0 व अनेक प्रकार की पत्र–पत्रिकायें बालक को उस ओर ले जा सकती है, जहां आत्मविश्वास का सीमोल्लंघन होता है। उच्च शैक्षिक उपलब्धि मूल्यविहीन बन जाती है। छात्रों एवं छात्राओं को ऐसे कुप्रभावों से बचकर रहना चाहिए।

प्राचार्यों के लिए सुझाव

प्राचार्य का पद अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। शैक्षिक संस्थाओं की स्थिति निर्विवाद रूप से उत्कृष्ट होती है। उसके दायित्व आधुनिक समय में बहुत अधिक बढ़ गये है। महाविद्यालय में पढ़ने – पढ़ाने का परिवेश

स्थापित करना ही शिक्षा प्रधान का कार्य नहीं होता। उसके कई ऐसे कार्य है, जो बालकों में अच्छे संस्कार, मानव मूल्य, शैक्षिक मूल्य, राजनैतिक दृष्टिकोण और यहां तक कि परिवारिक परिवेश को सुधारने से सम्बन्धित होते है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि प्रचार्य एक ऐसा महत्वपूर्ण अभिकरण है जो शिक्षा के द्वारा समाज को और समाज के द्वारा शिक्षा को अत्कृष्ट, मूल्यवान, समाजोपयोगी बनाने का कार्य करता है। इस तथ्य को दृष्टिकोण रखते हुए प्राचार्यों को निम्नलिखित सुझाव दिये जाते है –

1. महाविद्यालय की छवि प्राचार्य के व्यक्तित्व के अनुरूप बनती है, क्योंकि प्राचार्य ही विद्यालय के मुखिया के रूप में कार्य करता है। प्राचार्य का आचरण, चरित्र एवं कार्य पद्धति अध्यापकों एवं छात्रों को प्रभावित करती हैं अतः प्राचार्यों का सम्पूर्ण व्यक्तित्व इस प्रकार का होना चाहिए, जिससे प्राध्यापक एवं छात्र प्रेरणा ले सकें।
2. अध्यपान के प्रति पूर्ण समर्पित प्राध्यापकों को समय–समय पर आयोजित किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में सम्मानित किया जाना आवश्यक है।
3. महाविद्यालय में प्रायः वय–वर्ग, सामाजिक स्तर, आर्थिक स्तर, राजनैतिक दृष्टिकोण, संस्कार आदि रखने वाले किशोर विविध परिवारों से आते है। जहाँ तक आत्मविश्वास का प्रश्न है, पारिवारिक परिवेश इसका उदगम स्थल है। किन्तु प्राचार्य बालकों में उत्तम तथा उत्कृष्ट चरित्र, धैर्य, परिश्रमशीलता, संस्कार आदि महत्वपूर्ण गुणों का विकास करके क्रमशः छात्रों एवं छात्राओं के पारिवारिक परिवेश में कई ऐसी चीजें जोड़ सकता है, जो परिवार के सदस्यों की क्षमता से बाहर है।

प्राध्यापकों के लिए सुझाव

शिक्षक वह होता है जो अन्तः क्रियाओं के माध्यम से न केवल ज्ञान प्रदान करता है, अपितु अपने छात्रों का सर्वांगीण विकास करता है, अन्तः क्रियायें बहुआयामी होती है। कुछ अन्तः क्रियायें छात्र के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करती है और उसे समाज का सुनागरिक बनाती है। लेकिन कुछ अन्तः क्रियायें छात्र के व्यक्तित्व को इस प्रकार से निर्मित करती है कि वह समाज के अनुकूल ने होकर विपथगामी हो जाता है। अतः यहाँ प्राध्यापक का दोहरा कर्तव्य बनता है। एक ओर उसे इन कुत्सित अन्तः क्रियाओं पर नियंत्रण करना होता है, वहीं दूसरी ओर छात्र को वह उपयोगी अन्तः क्रियाओं के सम्पर्क में लाता है। अतः छात्र के लिए शिक्षक अन्य अभिकरणों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण होता है। शिक्षक का कार्य छात्रों एवं छात्राओं में केवल ज्ञान हस्तान्तरित करना ही नहीं है, अपितु अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व को हस्तान्तरित करना होता है। अतः इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षकों को निम्नलिखित सुझाव दिये जाते है –

1. प्राध्यापक का व्यक्तित्व गरिमामय होना चाहिए। जिसके गुण, शील, विवेक में सम्मुख हर मस्तक नत हो सके। उसका व्यक्तित्व एवं आचरण उस दीपक की भांति है जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है। अस्तु सर्वप्रथम शिक्षक को व्यवसायिक मानसिकता से मुक्ति पाना आवश्यक है।
2. प्राध्यापकों को छात्रों एवं छात्राओं के समक्ष सदैव आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। उनके व्यक्तित्व में अनेक कमियां हो सकती है, किन्तु उन कमियों को छात्रों में अन्तरीकृत नहीं होने देना चाहिए।
3. प्राध्यापक का दायित्व केवल ज्ञान का प्रकाश फैलाना ही नही, अपितु राष्ट्र के लिए आदर्श नागरिक तैयार करना भी है। इस दृष्टि से भी शिक्षक को राष्ट्र निर्माता कहा जाता है।
4. प्राध्यापकों को केवल विषय का ज्ञान ही नहीं देना चाहिए अपितु राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय तथा समाज के अन्दर होने वाली घटनाओं के बारे में भी छात्रों के सामान्य ज्ञान का स्तर उठाने का प्रयास करना चाहिए। क्योंकि ऐसा न करने पर छात्र समाज से विरत हो जाते है और उनका अवधान केवल विषय वस्तु तक ही केन्द्रित रहता है।
5. प्राध्यापकों को वैयक्तिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा सौन्दर्यत्मक आदि मूल्यों की शिक्षा व्यावहारिक रूप से देनी चाहिए।

शासन के लिए सुझाव

1. आज समाज में भौतिक मूल्य सतत् रूप से प्रभावशाली होते जा रहे है। यत्र–तंत्र सर्वत्र अर्थ का महत्व बढ़ता जा रहा है। शिक्षा भी इससे अत्यधिक प्रभावित हो चुकी है। आज शिक्षा इतनी अधिक मंहगी हो गई है कि आम आदमी, विशेष रूप से उच्च शिक्षा तथा तकनीकी शिक्षा का व्यय वहन करने की सोच भी नही सकता। आज यदि गहन मीमांशक दृष्टि से देखा जाये तो कमजोर वर्ग के लिए अलग शिक्षा है तथा उच्च आर्थिक वर्ग के बच्चों के लिए एक अलग शिक्षा दिखाई देती है। कमजोर आर्थिक संवर्ग का व्यक्ति अपने अधिक शैक्षिक उपलब्धि के बालक को भी शिक्षा दिलाने में अपने को असहाय महसूस करता है, न उसके पास इन पाठयक्रमों में प्रवेश के लिए धन है और नही अन्य शैक्षिक सुविधायें जुटाने के लिए संधाधन है। अतः यहाँ सरकार का यह दायित्व बन जाता है कि ऐसे परिवारों को चिन्हित कर उनके बच्चों को हर प्रकार की आर्थिक सहायता यथा छात्रवृत्ति, विशेष कोचिंग, निःशुल्क पुस्तक वितरण तथा निःशुल्क हॉस्टल सुविधा प्रदान करना चाहिए।
2. शोध अध्ययन में पाया गया है कि परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण छात्रों का

उन्नयन नहीं हो पा रहा है। अतः सरकार का यह भी कर्तव्य है कि वह निर्धन परिवार के बालकों एवं बालिकाओं को अत्यन्त कम ब्याज पर या बिना ब्याज के उच्च शिक्षा हेतु ऋण उपलब्ध करायें। यहां साक्षात्कार के माध्यम से ये तथ्य संज्ञान में आया है कि शैक्षिक ऋणका दुरूपयोग हो रहा है। इस ऋण को उपयोगी बनाने के लिए ये सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि यह शैक्षिक ऋण छात्रों एवं छात्राओं के शैक्षिक उन्नयन में ही उपयोग किया जाये।

3. आज बालकों एवं बालिकाओं की अच्छी शिक्षा के लिए माता–पिता की सुदृढ़ आर्थिक स्थिति होना परम वांछनीय है।यहाँ के अधिकांश निदर्शित सूचनादाता ग्रामीण क्षेत्रों से हैं, और उनकी आमदनी का साधन कृषि, दुग्ध उद्योग तथा कृषि मजदूरी है। जब तक कृषि उपज का पर्याप्त मूल्य सरकार द्वारा प्रदान नहीं किया जाता तब तक उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं हो सकती। यही नहीं ग्रामीण ऋण ग्रस्तता भी आर्थिक विपन्नता का कारण बनी हुई है। अतः सरकार को ग्रामीण कृषकों को ऋणग्रस्तता से बाहर निकालना होगा। केवल बैकों को ऋण माफ करने से दूरगामी अच्छे परिणाम नही मिल सकते। आज तक इस सम्बन्ध में केवल दो महत्वपूर्ण आयोग सरकार द्वारा गठित किये गये। लेकिन किसी भी आयोग ने ऋण माफ करने की संस्तुति नहीं की। इन आयोगों की दृष्टि तत्कालिन राहत पहुँचाने की नहीं थी, अपितु उनकी दृष्टि ग्रामीण ऋण ग्रस्तता की सांगोपांग तथा स्थाई समाधान पर टिकी थी। जब तक कृषि के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन नहीं किये जायेंगे किसानों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं हो सकती। अब तक ग्रामीण ऋणग्रस्तता से दुखी एक लाख चालीस हजार किसान आत्म हत्या कर चुके है। ये बात स्पष्ट करती है कि जब तक कृषि के सम्बन्ध में दीर्घ सूत्रीय तथा बहुआयामी सुधार नीति नहीं अपनाई जायेगी ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं हो सकती। एक आयोग ने ये सलाह दी थी कि कृषि लागत का डेढ़ गुना मूल्य दिया जाना चाहिए। इस हेतु सरकार को नवीन कृषि पद्धतियों, उन्नत बीजों, मृदा परीक्षण, उन्नत कृषि उपकरण, किसानों के लिए पर्याप्त साख निर्धारण विकासखण्ड स्तर पर सघन निर्देशन आदि की आवश्यकता है। जब तक ग्रामीण कृषकों की आर्थिक स्थिति नहीं सुधरती है, तक तक उनके बच्चों में शिक्षा के प्रति अभिरूचि, आत्मविश्वास, सुरक्षा की भावना और उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करना आकाश कुसुम की भांति है।

भावी शोध हेतु सुझाव

कोई भी कार्य एकाकी नहीं होता, वह पूर्व शोध कार्यों का प्रतिफल होता है और भावी शोधों का अवलम्बन होता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध स्नातक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं के पारिवारिक परिवेश का उनके आत्मविश्वास, राजनैतिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धियों से सम्बन्धित है। यह शोध कई अन्य शोधों का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। इस सन्दर्भ में निम्नलिखित भावी शोध किये जा सकते है, जो समाजोपयोगी हो सकते हैं –

1. अनुसूचित जाति के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में उनके परिवारिक परिवेश का उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्मविश्वास के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. पिछड़ी जातियों से सम्बन्धित स्नातक कक्षाओं में अध्ययनरत छात्रों के पारिवारिक परिवेश का उनकी राजनैतिक रूचि, आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।
3. स्नातकोत्तर स्तर की छात्राओं में राजनैतिक जागरूकता का अध्ययन।
4. शारीरिक रूप से अपंग छात्रों, छात्राओं में, सामान्य छात्र एवं छात्राओं की राजनैतिक जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन।
5. छात्रों के असंतोष का उनके पारिवारिक परिवेश से सम्बन्ध का अध्ययन।

6- गुरू–शिष्य सम्बन्धों में आये परिवर्तनों का उनके पारिवारिक परिवेश से सम्बन्ध का अध्ययन करना एक कारकीय विश्लेषण।

ग्रन्थ सूची

वर्मा, एम0	–	इन्ट्रोडैक्शन टू एजूकेशनल एण्ड साइक्लोजिकल रिसर्च, मुम्बई : एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1965।
अन्डर बुड, बी0जे0	–	साइक्लोजिकल रिसर्च, न्यूयार्क : एप्लेटॉन सेन्चुअरी क्राफ्टस, 1957।
मौली, जी0जे0	–	साइंस ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, नई दिल्ली, यूरेशिया पब्लिशिंग हाउस, प्राइवेट लिमिटेड, 1964।
रमल, ले0एफ0	–	एन इन्ट्रोडक्शन टू रिसर्च प्रोसीजर इन एजूकेशन न्यूयार्क : एप्लेटोन सेन्चुअरी क्राफ्ट इन्क0, 1954।
एकॉफ, आर0एल0	–	दी डिजाइन ऑफ सोशल रिसर्च चिकागो : दी यूनिवर्सिटी ऑफ चिकागो प्रेस, 1963।
लुन्डवर्ग, जी0ए0	–	सोशल रिसर्च, न्यूयार्क : लोन्गमेन्स, 1942।

लेहमेन, इरविन जे0 – एजुकेशनल रिसर्च (रीडिंगस इन फोकस) हॉल्ट, रिनेहर्ट एण्ड बिल्सन, इन्क0 न्यूयार्क, 1971।
कर्लिन्गर एफ0 एन0 – फाउन्डेशन्स ऑफ बी हैबियरल रिसर्च, न्यूयार्क : हॉल्ट, रिनेहर्ट एण्ड विल्सन इन्क0, 1969।
फर्स्टिगर, एल0एण्ड काट्ज डी0 – रिसर्च मैथड्स इन बीहैवियरल सांइस, न्यूयार्क, हॉल्ट रिनेहर्ट एण्ड विल्सन, 1953।
गुड, सी0बी0एण्ड स्केट्स डी0ई0 – मैथड्स ऑफ रिसर्च न्यूयार्क : एप्लेटान सेन्चुयअरी क्राफ्ट्स, 1954।
गुडे, डब्ल्यू0जे0 एण्ड हॉट, पी0के0 – मैथड्स ऑफ रिसर्च, न्यूयार्क मैक्ग्राहिल, 1962।
जहोदा, मैरी,एट आल – रिसर्च मैथड्स इन शोसल रिलेशन्स, न्यूयार्क हॉल्ट रिनेहर्ट एण्ड बिन्सटन, 1959।
यंग, पी0वी0 – साइन्टिफिक सोशल सर्वे एण्ड रिसर्च, मुम्बई, एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1966।
गैरिट, एच0ई0 – स्टेटिस्किस इन साइक्लॉजी एण्ड एजूकेशन, न्यूयार्क लोंगमेन्स ग्रीन एण्ड कम्पनी, 1970।
लैसिल, ओलिवर – स्टेटेस्टिकल मैथड्स इन एक्सपैरीमेन्टेशन, न्यूयार्क : दी मैकमिलन कं0 1960।
मैक्नैम्बर, क्यू0 – साइक्लोजिकल स्टेटिस्टिक्स, न्यूयार्क, जॉन बिली एण्ड सन्स, 1955।
लियोनार्ड, कार्मिकॉल – मैनुअल ऑफ साइक्लॉजी।
स्टीफन्स, जे0एम0 – एजूकेशनल साइक्लॉजी।
थार्पे एण्ड स्क्मुलर – पर्सनली।
मैक्डूगल, विलियम – एन इन्ट्रोडैक्शन टू शोसल साइक्लॉजी।
इम्बिल, बेन्जामिन – दी फन्डामैन्टल्स ऑफ साइक्लॉजी।
पीटर, एच0एन0 – मैथड्स ऑफ सोशियोलॉजिकल इन्क्वायरी आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी, 1968।
मुखर्जी, रवीन्द्रनाथ – सामाजिक सर्वेक्षण एण्ड शोध सरस्वती सदन यू0ए0 जवाहरनगर, दिल्ली।
सुमन, रामनाथ – शिक्षा और संस्कृति, गांधी साहित्य प्रकाशन कुटीर, 59 शिवचरन लाल रोड, इलाहाबाद।
ग्रेरसन – लिंग्युस्टिंक सर्वे ऑफ इण्डिया।
सोधी टी0एस0 – ए स्टडी ऑफ दी एटीट्यूडस ऑफ हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स टूवार्डस डिसीप्लेन, इन क्येस्ट ऑफ एजूकेशन।
बुच, एम0बी0 – ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, केस एम0एस0 यूनीवर्सिटी बरौदा, 1974।
कोठारी, रजनी – भारतीय राजनीति।
परबत, धामा, सी – पॉलिटिक्स ऑफ रिलीजन।
गड़कर, गजेन्द्र – द कांस्टीट्यूशन इण्डिया, बम्बई, 1967।
गड़कर, गजेन्द्र – द इण्डियन पार्लियामेंट एण्ड फन्डामेन्टल राइट्स, कलकत्ता ईस्टर्न, 1972।
बसु, डी0डी0 – कमेन्ट्री ऑफ द कांस्टीट्यूशन ऑफ इण्डिया, कलकत्ता, 1956।
छावरा, हरिन्द्र, के0 – स्टेट पॉलिटिक्स इन इण्डिया/सुरजीत देहली, 1980।
मदन, टी0एन0 – रिलीजन इन इण्डिया।
भट्ट, अनिल – कास्ट एण्ड पॉलिटिक्स, न्यू देहली, 1995।
सरकिसर, वी0एम0 – पॉलिटिकल बीहैवियर इन इण्डिया, बॉम्बे, मानक ताल्स, 1965।
हेनरी, ई0 गेस्ट – शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी।
पानिकर, के0एम0 – इसेन्शीयल फीचर्स ऑफ इण्डियन कल्चर, बाम्बे, भारतीय विद्या भवन, 1974।
सी0 भाम्भरी, सी0पी0 – ब्यूरोक्रेसी एण्ड पॉलिटिक्स, न्यू देहली, विकास, 1973

वेनर, माइनर – पॉलिटिकल इन्टीग्रेशन एण्ड पॉलिटिकल डबल्पमेंट अमेरिकन एकेडमी ऑफ पॉलिटिकल एण्ड सोशल साइन्सेज, सीसीसी–8, 1965 पेज 57 – 64।

गुप्ता, एस0पी0 – सांख्यिकीय विधियां, शारदा पब्लिकेशन, इलाहाबाद, 2002।

रॉय, ए0बी0 – स्टूडेन्ट्स एण्ड पॉलिटिक्स इन इण्डिया, मनीषा बुक सर्विस, नई दिल्ली, 1987।

डॉ0शास्त्री,वेदप्रकाश – प्राचीन और आधुनिक शिक्षा पद्धतियां एक दृष्टिकोण शिक्षा एक सार्थक परिसंवाद, अतुल प्रकाशन अजमेर, 1995, पृष्ठ – 83।

डॉ0 मिश्र0 डी0सी0 – भारत में शैक्षिक पद्धति का विकास, अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर पृष्ठ – 2 – 3 ।

डॉ0 पाठक, गणेश कुमार – पर्यावरणीय शिक्षा क्यों और कैसे, कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका, सितम्बर बलिया, उ0प्र0, 1998, पेज – 6।

डॉ0 तरूण, रघुवंश – भारतीय शिक्षा उसकी समस्यायें तथा विश्व की शिक्षा प्रणालियां प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2000, पृष्ठ – 13।

श्रीमती जैन, मनोरमा – केन्द्रीय विद्यालय एवं राज्य शासित उ0मा0 विद्यालय, में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर शारीरिक शिक्षा द्वारा व्यक्तित्व पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन एम0एड0 डिजरटेशन जीवाजी वि0वि0 ग्वालियर, 2000 पृष्ठ – 11।

सच्चिदानन्द, ढौडियाल – शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1972, पृष्ठ – 197।

डॉ0 भार्गव, महेश – आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन भार्गव भवन 4/230 कचहरी, घाट, आगरा, 1999, पृष्ठ–227।

डॉ0 वर्मा प्रीति एवं डॉ0डी0एन0श्रीवास्तव – मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकीय, रवि मुद्रालय आगरा, 1996, पृष्ठ – 368।

गैरेट हैनरी ई0 – मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी कल्याणी पब्लिसर्स नई दिल्ली, 2002।

Desh Bandhu – Environmental Education and sustainable development Indian Environmental Society, New Delhi, 1972, Page – 96.

Shukla, R.P. – Factors determining Scientific talent in secondary School students Ph.D. Education Jiwali University Gwalior, 1992.

Kumar, Kuldeep – "Social Climate in Schools and Characteristics of pupils" Ph.D. Thesis, Baroda University, 1972.

Reddy, C.N. – "Organization Climate in selected school", M.Ed. desertation Baroda Univeristy, 1972.

Parikh, Vinodini – "Organization climate and teacher's morable" M.Ed. desertation Baroda University, 1973.

Sharma, M.L. – "An investigation in to organizational climate of secondary school of Raj.". M.S. University of Baroda Ph.D. Thesis, 1973.

George, Mathew – "The Classroom behaviour of teacher's and its relationship with their creativety and self concept." Ph.D. Thesis, 1976.

Reddy, C.A. – "Interrelationship between organizational climate of secondary schools and the

achievement of school and their students." Ph.D. Thesis Telangana Univeristy, 1977.

Prakasham, D – "A Study of teacher effectiveness as a function of school organizational climate and teaching competency." Ph.D. Education R.S. University, 1986.

Chakrawati, Manas – "A study of the organizational climate of secondary school in West Bengal and its correlation with orhther relevent variables."

Lalita Kumari K.A. – "A study of classroom climate, pupils psyche and teacher's behaviour in innovative class rooms of some schools in the state Karnataka" Ph.D. Education M.S. University Karnataka, 1984.

Pradhass – "Effect of School Organizational Climate on the Creativety, adjustment and academic of Orissa." Ph.D. Education Utkal University, 1991.

Latti, Nongnuang – "A study of organizational climate at secondary schools of East Zone of Thiland in the context of some variables." Ph.D. Education S.P. Univeristy Thiland, 1988.

लैंग फिण्ड एवं बेल्ड पलाश – मासिक पत्रिका, म0प्र0 राज्य शिक्षक–प्रशिक्षण मण्डल भोपाल, 1995, मार्च–अप्रैल, पृष्ठ – 41 ।